



दैनिक समाचार पत्र
भारतार्थ खबर
खबर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

विकसित भारत 2047 का संकल्प: आत्मनिर्भरता, नवाचार और युवा शक्ति से बदलेगी देश की तस्वीर: प्रधानमंत्री मोदी

गरीबों के इलाज के लिए टाटा ट्रस्ट्स की पहल, पांच साल में खुल सकते हैं 50 गैर-लाभकारी अस्पताल



भारतयें खबर
Bhaaraataarth.com
 संवाददाता अशोक कुमार सिंह
 नई दिल्ली, 19 अक्टूबर 2026। भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य केंद्र सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आत्मनिर्भरता, तकनीकी नवाचार, घरेलू विनिर्माण और युवाओं की भागीदारी को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस 2026 के अपने संबोधन में देशवासियों से बड़े सपने देखने, दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीका निर्भाने का आह्वान किया था। विकसित भारत का लक्ष्य केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है। इसकी वास्तविक सफलता इस बात से भी तथा होगी कि देश के नागरिकों को बेहतर शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं, रोजगार के अवसर, आधुनिक सुविधाएं और समानजनक जीवन कितना उपलब्ध हो पाता है। 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की चुनौती भारत वर्ष 2047 में अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा। इस ऐतिहासिक पड़ाव तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने की परिकल्पना के लिए सरकार, उद्योग जगत, कृषि क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थानों और आम नागरिकों के साझा प्रयास आवश्यक होंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने प्रयास संबोधन में देश की बड़ी आवादी की दृष्टि सांघुषिक शक्ति पर जोर दिया। उनका संश्लेष था कि राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मजबूत इच्छाशक्ति, निरंतर परिश्रम और नागरिकों की भागीदारी महत्वपूर्ण है हालांकि, विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए केवल लक्ष्य निर्धारित करना पर्याप्त नहीं होगा। आर्थिक वृद्धि को निरंतरता, उत्पादकता में सुधार, रोजगार सृजन और विकास के लाभों का समानान्तर अवसरों के रूप में वितराल भी जरूरी होगा आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उपजदार पर जोर देते हुए भारत की आर्थिक क्षमता मजबूत करने के लिए परेलू विनिर्माण, अनुसंधान, तकनीकी विकास और स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आवश्यक वस्तुओं और महत्वपूर्ण तकनीकों के लिए दूसरे देशों पर अधिक निर्भरता कम करने से देश की आर्थिक तथा रणनीतिक क्षमता मजबूत हो सकती है।

इसके लिए उद्योगों को आधुनिक तकनीक अपनाने, छोटे और मध्यम उद्यमों को बेहतर सुविधाएं देने तथा भारतीय उत्पादों की गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धक क्षमता बढ़ाने पर ध्यान देना होगा। घरेलू उत्पादन तथा व्यापक लाभ दे सकेगा, जब उसके साथ पर्याप्त रोजगार, कौशल विकास और निर्यात के अवसर भी बढ़ें। आत्मनिर्भरता का अर्थ वैश्विक अर्थव्यवस्था से दूरी बनाना नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं को विकसित करके हुए अंतरराष्ट्रीय व्यापार और तकनीकी सहयोग में मजबूत भागीदारी करना है। इस संतुलन से भारत घरेलू जरूरतों को पूरा करने के साथ वैश्विक बाजार में भी अपनी स्थिति बेहतर बना सकता है। विकास की शक्ति की सपत्तधार पर नजर प्रधानमंत्री के संबोधन में विकास के सात प्रमुख क्षेत्रों पर आधारित शक्ति की सपत्तधार का उल्लेख किया गया। इन क्षेत्रों में विनिर्माण, कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार, बुनियादी ढांचा और संपर्क व्यवस्था, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, हरित एवं नीली अर्थव्यवस्था तथा भारत की सांस्कृतिक और वैश्विक संप्रदाय को मजबूत करना शामिल है। इन क्षेत्रों का विकास देश की आर्थिक क्षमता और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को नई दिशा दे सकता है। कृषि और खाद्य प्रसंस्करण में निवेश से किसानों की आय तथा ग्रामीण रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। वहाँ, आधुनिक बुनियादी ढांचा उद्योगों, व्यापार और परिवहन को गति दे सकता है। इसी तरह, रक्षा उत्पादन में घरेलू क्षमता बढ़ाना, स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहन देना और सामुदायिक संसाधनों का टिकाऊ उपयोग करना दीर्घकालीन विकास के लिए महत्वपूर्ण है। इन लक्ष्यों की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण

नीतियों, पर्याप्त निवेश, पारदर्शी क्रियान्वयन और समयबद्ध मूल्यांकन की जरूरत होगी। भारत की युवा आबादी विकसित भारत के लक्ष्य की मुहतापूर्ण ताकत बन सकती है। लेकिन इस क्षमता को वास्तविक आर्थिक और सामाजिक उपलब्धियों में बदलने के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, व्यावहारिक कौशल, अनुसंधान और रोजगारपरक प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देना होगा। 18 अक्टूबर को गुजरात के पोरबंदर जिले में आयोजित विकसित भारत युवा संवाद में केंद्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी की अपील की। उन्होंने प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक लक्ष्य युवा नेताओं को तैयार करने के प्रयासों का भी उल्लेख किया। युवाओं को केवल रोजगार तलाशने वालों तक सीमित रखने के बजाय उन्हें उद्यमिता, नवाचार और नए विचारों को व्यावहारिक रूप देने के अवसर उपलब्ध कराना जरूरी है। स्टार्टअप, डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैज्ञानिक अनुसंधान और स्थानीय समस्याओं के तकनीकी समाधान इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके साथ ही, ग्रामीण और छोटे शहरों के युवाओं को भी प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार तक पहुंच के समान अवसर मिलने चाहिए। तभी युवा शक्ति का लाभ व्यापक स्तर पर देश को मिल सकेगा। आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक सशक्तीकरण भी जरूरी किसी देश के विकसित होने का आकलन केवल सकल घरेलू उत्पाद या औद्योगिक उत्पादन के आधार पर नहीं किया जा सकता। शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता,

महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, ग्रामीण सुविधाएँ और सामाजिक सुरक्षा भी विकास के महत्वपूर्ण मानक हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, पेयजल, बिजली, इंटरनेट और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार आवश्यक है। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, उद्यमिता और नियंत्रण प्रक्रिया में अधिक अवसर देना भी आर्थिक विकास को व्यापक आधार प्रदान कर सकता है। इसके अलावा, समाज के कमजोर वर्गों तक सरकारी योजनाओं का वास्तविक लाभ पहुँचना चाहिए। विकास की योजनाओं का मूल्यांकन इस आधार पर भी होना चाहिए कि उनसे आम नागरिक के जीवन में किनका सकारात्मक बदलाव आया है और रोजगार तथा आय के अवसर कितने बढ़े हैं। लक्ष्य को उपलब्धि में बदलने की जरूरत वर्ष 2047 तक विकसित भारत का सपना महत्वाकांक्षी है, लेकिन इसकी उपलब्धता दोष नीतियों, भ्रष्टाचारी क्रियान्वयन और निरंतर जवाबदेही पर निर्भर करेगी। आत्मनिर्भरता, नवाचार, आधुनिक तकनीक और युवा शक्ति देश की प्रगति को गति दे सकते हैं। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समानता और क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने पर भी ध्यान देना होगा। विकसित भारत की वास्तविक पहचान केवल ऊँची विकास दर या आधुनिक इमारतों से नहीं बनेगी, बल्कि इससे युवा होंगी कि नागरिकों को बेहतर जीवन, सम्मानजनक रोजगार और आगे बढ़ने के समान अवसर कितने मिलते हैं। सरकार, उद्योग जगत, किसान, युवा और आम नागरिक जब सझा जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ेंगे, तभी 2047 का लक्ष्य व्यापक राष्ट्रीय उपलब्धि बन सकेगा।

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com
नई दिल्ली, 19 अक्टूबर 2026। देश
में सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं की
जरूरत के बीच टाटा ट्रस्ट्स ने अगले पांच
वर्षों के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र में विस्तार की
योजना बनाई है। वर्ष 2026 से 2031 तक
की प्रस्तावित स्वास्थ्य रणनीति के तहत
देशभर में 40 से 50 गैर-लाभकारी

सके गा। इस व्यवस्था का उद्देश्य अस्पतालों की सेवाओं को आर्थिक रूप से टिकाऊ बनाते हुए गरीब परिवारों को इलाज उपलब्ध कराने में मदद करना है। 75 ब्लॉकों में 25 लाख लोगों तक पहुंचाने का लक्ष्य प्रस्तावित स्वास्थ्य रणनीति के तहत 75 ब्लॉकों में लगभग 25 लाख लोगों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अलावा, देश की 100

इलाज का खर्च इस मॉडल में भुगतान करने में लक्ष्य मरीजों से प्राप्त शुल्क के जरिए कमजोर आर्थिक स्थिति वाले मरीजों के उपचार को संशोधन देते हैं और परिकल्पना है। हालांकि, इस व्यवस्था की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि मरीजों की आर्थिक पात्रता कैसे तय की जाती है। कितनी चिकित्सा सेवाएं रियायती दरों पर उपलब्ध होंगी हैं और अस्पतालों के संचालन के लिए पर्याप्त संसाधन कैसे जुटाए जाते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाना प्रमुख चुनौती है देश के ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में चिकित्सकों, विशेषज्ञ स्टाफों, जांच सुविधाओं और आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता अब भी स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण विषय है। ऐसे क्षेत्रों में अस्पताल स्थापित करने के साथ प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों को नियुक्ति, दवाओं की उपलब्धता और नियमित सेवाओं का संचालन भी जरूरी होगा। टाटा ट्रस्ट्स की प्रस्तावित योजना का वास्तविक प्रभाव अस्पतालों की स्थापना, सेवाएं शुरू होने, उपचार की लागत और जरूरतमंद मरीजों तक लाग पहुंचने के आधार पर आंका जाएगा। इसके लिए पारदर्शी पात्रता प्रक्रिया और नियमित निगरानी भी महत्वपूर्ण होगी। यदि निर्धारित लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है, तो यह पहले आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बेहतर बनाने में योगदान दे सकती है। पिछला, योजना के विस्तृत क्रियान्वयन, अस्पतालों के स्थान और सेवाएं शुरू होने की समय-सीमा से संबंधित आधिकारिक जानकारी महत्वपूर्ण रहेगी।



अस्पताल स्थापित करने की योजना है। इसका उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोरों को सहायता देना है। वहाँ तक बेहतर चिकित्सा सुविधाओं की आवश्यकता है। पढ़ा-लिखा और स्वास्थ्य सेवाओं को प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। प्रस्तावित मॉडल के अनुसार, इलाज का खर्च वहन करने में सक्षम मरीजों से शुल्क लिया जाएगा, जबकि इससे सहायता प्राप्त आय का उपयोग जरूरतमंद मरीजों के उपचार में सहायता के लिए किया जाएगा।

सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने की योजना भी शामिल है। इस पहल के माध्यम से अस्पतालों की स्थापना के साथ-साथ मौजूदा स्वास्थ्य व्यवस्था की क्षमता बढ़ाने पर भी ध्यान दिया जाएगा। सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्रों को मजबूत करने से स्थानीय स्तर पर चिकित्सा सेवाओं की उपलब्धता बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। गैर-लाभकारी मॉडल से जरूरतमंदों को राहत की उम्मीद भारत में

नगराना की महत्वपूर्ण होगी। यदि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्ति के लिये लागू किया जाता है, तो यह पहल आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बेहतर बनाने में योगदान दे सकती है। प्रशिक्षण, योजना के विस्तृत क्रियान्वयन, अस्पतालों के स्थान और सेवाएँ शुरू होने की समय-सीमा से संबंधित आधिकारिक जानकारी महत्वपूर्ण रहेगी।

दिल्ली में ई-रिक्शा की संख्या पर लग सकती है परिसीमन पर DMK की दो टूक: तमिलनाडु के हितों से समझौता नहीं, केंद्र के विशेष सत्र पर नजर लगाम, 2.5 लाख पंजीकरण की सीमा का प्रस्ताव

भारतार्थ खबर Bhaaraataarth.com

नई दिल्ली, 19 अक्टूबर 2026। दिल्ली में ई-रिश्का की लगातार बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने एक नई योजना का प्रस्ताव रखा है। प्रस्तावित व्यवस्था के तहत राजधानी में अधिकतम 2.5 लाख ई-रिश्का के पंजीकरण की सीमा तय की जा सकती है। यदि यह सीमा पूरी हो जाती है, तो नए ई-रिश्का का पंजीकरण रोकेन का प्रावधान लागू हो सकता है। हालाँकि, दिल्लीई-रिश्का (पंजीकरण और संचालन) योजना, 2026 को अभी अंतिम मंजूरी नहीं मिली है। सरकार ने प्रस्तावित योजना पर आम नागरिकों और संबंधित पक्षों से 30 दिनों के भीतर सुझाव और आपत्तियाँ माँगी हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं पर विचार करने के बाद ही योजना के अंतिम स्वरूप और कानूनीयन को लेकर निर्णय लिया जाएगा। बढ़ती संख्या को नियंत्रित करने की तैयारी दिल्ली में ई-रिश्का कम दूरी की यात्रा और सार्वजनिक परिवहन के अन्य साधनों तक पहुँच बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से बाजारों, आवासीय इलाकों और मेट्रो स्टेशनों के आसपास इनका उपयोग व्यापक रूप से होता है। लेकिन इनकी बढ़ती संख्या के बीच यातायात प्रबंधन, सड़क पर उपलब्ध सीमा और संचालन व्यवस्था को लेकर चुनौतियाँ भी सामने आती रही हैं। प्रस्तावित पंजीकरण संख्या का उद्देश्य ई-रिश्का को लेकर नियंत्रित करना और उनके संचालन के लिए व्यवस्थित ढाँचा तैयार करना बताया जा रहा है। हालाँकि, इस सीमा के निर्धारण का आधार और इसे लागू करने की विस्तृत प्रक्रिया अंतिम योजना में स्पष्ट होना महत्वपूर्ण होगा। अंतिम मंजूरी से पहले जनता से माँगे सुझाव सरकार ने योजना को अंतिम रूप देने से पहले लोगों को अपनी राय रखने का अवसर दिया है। 30 दिनों की निर्धारित अवधि में प्राप्त सुझावों और आपत्तियों के आधार पर प्रस्तावित प्रावधानों की समीक्षा की जा सकती है। इस प्रक्रिया में ई-रिश्का चालकों, वाहन मालिकों, यात्रियों और परिवहन क्षेत्र से जुड़े अन्य पक्षों की चिंताओं पर विचार करना महत्वपूर्ण होगा। पंजीकरण की सीमा लागू होने से नए वाहन खरीदने और इस क्षेत्र में रोजगार तलाशने वाले लोगों पर भी प्रभाव पड़ सकता है।

Bhaaratath.com

संवाददाता अशोक कुमार सिंह

नई दिल्ली, 19 अक्टूबर 2026 | देश में

परिसीमन और महिला आरक्षण से जुड़े प्रस्तावित विधेयकों को लेकर राजनीति सरगमीं तेज हो रही है। केंद्र सरकार की ओर से अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में संसद का विशेष सत्र बुलाए जाने की संभावनाओं से जुड़ी मीडिया रिपोर्टों के बीच तमिलनाडु की सत्तारूढ़ द्रविड़ मुनेत्र कडिम (DMK) का रुख अलग मना जा रहा है। पार्टी लगातार यह मांग उठाती रही है कि परिसीमन की प्रक्रिया में तमिलनाडु जैसे उन राज्यों के हित सुरक्षित रखे जाएं, जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। हालांकि, विशेष सत्र की तारीख और प्रस्तावित विधेयकों को लेकर केंद्र सरकार की ओर से आधिकारिक घोषणा नहीं होने के कारण आगे की रणनीति पर अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है। परिसीमन पर समर्थन जुटाने की चुनौती मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, केंद्र सरकार परिसीमन और महिला

के लिए विपक्षी तथा क्षेत्रीय दलों का समर्थन हासिल करने की कोशिश कर सकती है। इस संदर्भ में DMK की भूमिका पर भी नजर रखी जा रही है। संवैधानिक संशोधन से जुड़े प्रावधानों के तहत आवश्यक बहुमत

परिसीमन पर DMK की दो



तमिलनाडु के हितों से समझौता
केंद्र के विशेष सत्र पर नजर

जुटाना सरकार के लिए महत्वपूर्ण होगा। परिसीमन का मुद्दा केवल लोकसभा सीटों की संख्या बढ़ाने या निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं तय करने तक सीमित नहीं है। इसका सीधा संबंध राज्यों के प्रतिनिधित्व, संघीय संतुलन और संसद में विभिन्न क्षेत्रों की राजनीतिक भागीदारी से है। यही कारण है

प्रक्रिया के संभावित प्रभावों को लेकर चिंता जताते रहे हैं। DMK की प्रमुख मांग: जनसंख्या नियंत्रण करने वाले राज्यों के हित सुरक्षित रहें। DMK का तर्क है कि जिन राज्यों ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी नीतियां अपनाई, उन्हें परिसीमन के दौरान राजनीतिक प्रतिनिधित्व के मामले में नुकसान नहीं उठाना चाहिए। पार्टी का मानना है कि यदि सीटों के पुनर्वितरण में जनसंख्या को ही निर्णायक आधार बनाया गया, तो अपेक्षकृत कम जनसंख्या वृद्धि वाले राज्यों का संसद में प्रभाव कमजोर पड़ सकता है। DMK संसद ए. राजा ने जून 2026 में परिसीमन विधेयक के मौजूदा स्वरूप पर आपत्ति जताते हुए राज्य के अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखने की बात कही थी। पार्टी की प्रमुख चिंताओं

पुश्पा और राज्यों के बीच संतुलन बनाए रखना शामिल है। इस बहस का व्यापक संवैधानिक पक्ष भी है। परिसीमा की प्रक्रिया में एक ओर जनसंख्या के आधार पर समान प्रतिनिधित्व का सिद्धांत है, तो दूसरी ओर राज्यों के बीच राजनीतिक स्थिति की दृष्टि में कई राजनीतिक मुद्दों पर प्रस्तावनाओं का अद्वैत को DMK प्रमुख एम.के. स्टालिन की अध्यक्षता में पार्टी सांसदों की बैठक हुई। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, सरकार को पद से हटाने की मांग, मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) को समाप्त करने और मतपत्रों के माध्यम से मतदान कारोने जैसे मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किए गए। पार्टी ने रक्तक के विरोध में जारी मतदर्शनों को भी समर्थन दिया। बैठक से जुड़े मुद्दों ने चुनावी प्रक्रिया और नैतिकता के व्यवस्था को लेकर DMK के राजनीतिक रुख को सामने रखा। हालांकि, इन प्रस्तावों को परिसीमा विधेयक पर पार्टी

उचित नहीं होगा। क्या केंद्र सरकार को मिलेगा DMK का समर्थन? फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यही है कि परिसीमन से जुड़े प्रस्तावों पर केंद्र सरकार और DMK के बीच सहमति बन पाएगी या नहीं। सरकार के बीच आवश्यक संवैधानिक समर्थन जुटाना महत्वपूर्ण होगा, जबकि DMK तमिलनाडु के हितों की सुरक्षा को अपनी प्रमुख शक्ति मानी रही है। अब तक उल्लब्ध जानकारी के आधार पर DMK की ओर से परिसीमन विधेयक को समर्थन देने या भाजपा के साथ किसी नए गठबंधन की घोषणा की पुष्टि नहीं हुई है। इसलिए पार्टी के संभावित राजनीतिक बदलावों से जुड़ी चचाओं को अटकलों के रूप में ही देखा जाना चाहिए। महिला आरक्षण को मुद्दा भी बहाल कर मंथनापूर्ण हिस्सा है। महिलाओं की विषयी संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व देने के उद्देश्य और परिसीमन की प्रक्रिया के बीच संबंध को स्पष्ट करना आवश्यक होगा, ताकि आरक्षण के क्रियाव्यवहार और राज्य के प्रतिनिधित्व से

साथ किया जा सके। अन्तर्केंद्र के अगले कदम पर टिकी निगाहें आने वाले दिनों में तीन घटनाक्रम विशेष महत्व रखेंगे—संसद के विशेष सत्र को आधिकारिक घोषणा प्रस्तावित विधेयकों के प्राप्ति और प्रावधानों की जानकारी तथा तत्पश्चात सहित संसदीय राज्यों की चिन्ताओं पर केंद्र सरकार का रुख। परिशीमन जैसे संवेदनशील विषय पर राजनीतिक सहमति बनाने के लिए पारदर्शी प्रक्रिया, स्पष्ट संवैधानिक प्राधान्य और राज्यों के साथ सार्थक संवाद आवश्यक होंगे। DMK के लिए चुनौती तमिलनाडु के हितों की रक्षा करते हुए अपनी आगे की रणनीति तय करने की है, जबकि केंद्र सरकार के सामने विभिन्न राज्यों की चिन्ताओं और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व के सिद्धांतों का सवाल है। अतः इस मुद्दे की दिशा राजनीतिक बयानों से अधिक विधेयकों के वास्तविक स्वरूप, संवैधानिक प्रक्रिया और केंद्र तथा राज्यों के बीच होने वाली बातचीत से तय होगी।

H-1B वीजा विवाद पर जेडी वेंस ने जताया खेद, भारतीय पेशेवरों के योगदान पर फिर छिड़ी बहस

भारताखंड खबर
BhaaraatArth.com
वांशिगंटन,19 अक्टूबर 2026।
अमेरिका में H-1B वीजा कार्यक्रम और
विदेशी कुशल पेशेवरों की नियुक्ति को लेकर
बहस एक बार फिर तेज हो गई है। अमेरिकी
उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने भारतीय पेशेवरों सहित
H-1B वीजा पर काम करने वाले विदेशी
कर्मचारियों के संदर्भ में अपनी विवादित
टिप्पणी पर सफाई देते हुए कहा कि उनके शब्दों
का चयन उचित नहीं था। उन्होंने स्पष्ट किया
कि उनकी आलोचना का उद्देश्य विदेशी
कर्मचारियों का अपमान करना नहीं, बल्कि
उनकी कर्तव्यों और व्यवस्थाओं पर सवाल
उठाना था, जिनके माध्यम से कर्मचारियों के
कथित शोषण की आशंका जताई जाती है।
इस घटनाक्रम ने अमेरिका में स्थानीय नागरिकों

के रेोजगार हितों, विदेशी प्रतिभाओं की जरूरत और भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) पेशेवरों के भविष्य से जुड़े मुद्दों को फिर चर्चा के केंद्र में ला दिया है। विवादास्पद डिप्लोमा वेंस की सफाई विवाद की शुरुआत तब हुई।

जब जैडी वेंस ने H-1B वीजा पर काम करने वाले विदेशी पेशेवरों के लिए इंडेंडेंट सर्वेंट्स जैसी विवादास्पद शब्दावली का इस्तेमाल किया। इस डिप्लोमा को लेकर भारत में आलोचना हुई। भारतीय पेशेवरों के योगदान और उनकी पहचान को नकारा गया।

नीतियों पर चर्चा की जानी चाहिए। वेंस की सफाई से विवाद के एक पहलु पर स्पष्टीकरण जरूर आया है, लेकिन इससे H-1B वीजा कार्यक्रम को लेकर अमेरिकन में जारी व्यापक बहस समाप्त होती नहीं दिखती। इस मुद्दे पर

रोजगार, वेतन, श्रम अधिकार और विदेशी प्रतिभाओं की भूमिका जैसे सवाल आज भी महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

H-1B वीजा क्या है और भारतीय पेशेवरों की भूमिका क्यों अहम? H-1B वीजा अमेरिकी कंपनियों को विशेष करण वाले विदेशी कर्मचारियों को नियुक्त करने की अनुमति देता है। सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और अन्य विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में भारतीय पेशेवर लंबे समय से इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। अमेरिकी तकनीकी उद्योग में भारतीय कर्मचारियों की भागीदारी ने अमेरिकी 17 वीं सदी के चारों ओर

कारण मानने के बजाय नियुक्ति प्रक्रिया, वेतन, कार्य परिस्थितियों और श्रम अधिकारों की निष्पक्ष समीक्षा अधिक उपयोगी होगी। H-1B और PERM प्रक्रिया में अंतर समझना जरूरी है अमेरिका में विदेशी कर्मचारियों के रोजगार और स्थायी निवास से जुड़ी प्रक्रियाओं को लेकर सख्ती की खबरों ने भारतीय प्रेषकों की चिंता बढ़ाई है। इस संदर्भ में H-1B वीजा और PERM श्रम प्रमाण प्रक्रिया के बीच अंतर समझना आवश्यक है। H-1B वीजा विशेष कौशल वाले विदेशी कर्मचारियों के अस्थायी रोजगार से संबंधित है, जबकि दृष्टांत प्रक्रिया आम तौर पर नियोजन द्वारा किसी विदेशी कर्मचारी के लिए रोजगार-आधारित स्थायी निवास को दिशा में उठाया जाने वाला एक कदम है। इसलिए PERM प्रक्रिया पर किसी कंपनी के हितों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना आवश्यक है।

और अपने नागरिकों के रोजगार अवसरों और वेतन की सुरक्षा का सवाल है, तो दूसरी ओर वैश्विक प्रतिभाओं को आकर्षित करने तथा यदि कर्मचारियों विदेशी कर्मचारियों की नियुक्ति का इस्तेमाल वेतन कम करने या श्रम नागिकों से बचने के लिए करती हैं, तो ऐसी परिस्थितियों की निम्नता जांच और उचित कवायद जरूरी है। दूसरी ओर, विदेशी कर्मचारियों को केवल उनकी राष्ट्रियता के आधार पर संहिता की दृष्टि से देखना भी उचित नहीं होगा। भारतीय आईटी पेशेवरों के लिए नीति में स्पष्टता, निम्नता नियुक्ति प्रक्रिया और रोजगार की स्थिरता महत्वपूर्ण हैं। कंपनियों के लिए भी यह जरूरी है कि वे बीजा नियमों का पालन करें और कर्मचारियों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करें। आगे की राह: नीतियों और फैसलों पर रखी नजर जेडी वेंकट की टिप्पणी पर खेद जताते हैं निम्नता जांच और उचित कवायद जरूरी है, जेडी



भारतार्थ खबर
Bhaaraataarth.com

उल्लेख करते हुए कहा कि भारत के लिए भी इसी तरह की साजिश रची गई थी। उनके मुताबिक, देश में सत्ता परिवर्तन का रास्ता केवल लोकतांत्रिक और चुनावी प्रक्रिया से होकर गुजरता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था पर दिया जोर केंद्रीय मंत्री के बयान का प्रमुख संदेश था कि किसी भी लोकतांत्रिक देश में सरकार बदलने का अधिकार जनता को चुनाव के माध्यम से मिलता है। उन्होंने हिंसा या अस्थिरता के जरिए सत्ता परिवर्तन की कोशिशों के प्रति आगाह किया। भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र में राजनीतिक मतभेदों का समाधान संवैधानिक संस्थाओं, शांतिपूर्ण संवाद और निष्पक्ष चुनावों के जरिए किया जाना महत्वपूर्ण है। राजनीतिक हलों और जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है कि वे अपने विचारों को लोकतांत्रिक मर्यादों में के भीतर रखें तथा किसी भी प्रकार की हिंसा को

उसके समर्थन में प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों का विस्तृत विवरण नहीं है। इसलिए इन दावों को स्थापित तथ्य के बजाय केन्द्रीय मंत्री के आरोप के रूप में ही देखा जाना चाहिए। फ्रांस और बांग्लादेश की घटनाओं की परिस्थितियाँ भी अलग-अलग रही हैं। ऐसे में विभिन्न देशों की घटनाओं की तुलना करते समय उनके राजनीतिक, सामाजिक और प्रशासनिक संदर्भों को ध्यान में रखना जरूरी है। राजनीतिक बयान के बीच जवाबदेही का सवाल इस बयान से राजनीतिक हलकों में लोकतांत्रिक स्थिरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक विरोध की सीमाओं पर चर्चा तेज होने की संभावना है। किसी भी गंभीर साजिश के आरोप की विवशनीयता संबंधित साक्ष्यों, जांच और आधिकारिक तथ्यों से तय होती है। लोकतंत्र में सरकार



भारतीय खबर
Bhaaraataarth.com
नई दिल्ली, 19 अक्टूबर 2026।
केन्द्रीय संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक
कार्य मंत्री किरन रिजजू ने आरोप लगाया
है कि भारत में भी फ्रांस और बांग्लादेश जैसी
हिंसक परिस्थितियाँ पैदा करने की साजिश
रची गई थी। उन्होंने दावा किया कि भारत-
विरोधी तत्वों और कुछ राजनेताओं ने

हिसा या आखिरती के जरिए सत्ता परिवर्तन की कोशिशों के प्रति आगाह किया। भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र में राजनीतिक मतभेदों का समाधान संवैधानिक संस्थाओं, शांतिपूर्ण संवाद और निष्पक्ष चुनावों के जरिए किया जाना महत्वपूर्ण है। राजनीतिक दलों और जनप्रतिनिधियों की जिम्मेदारी है कि वे अपने विचार लोकतांत्रिक मर्यादाओं के भीतर रखें तथा किसी भी प्रकार की हिंसा को

सदस्यों को ध्यान में रखते हुए जेलरों को राजनीतिक बयान के बीच जवाबदेही का सवाल इस बयान से राजनीतिक हलकों में लोकतांत्रिक स्थिरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक विरोध की सीमाओं पर चर्चा तेज होने की संभावना है। किसी भी गंभीर साजिश के आरोप की विश्वसनीयता संबंधित साक्ष्यों, जांच और आधिकारिक तथ्यों से तय होती है। लोकतंत्र में सरकार

आवश्यक सेवाएँ जारी रही और व्य-
कमजोर वर्गों को सुरक्षित सहायक
उपकरण कार्डें आई। राज्य सरकारों ने
आपदा प्रबंधन योजनाओं की नियमित
समीक्षा करनी चाहिए। स्थानीय निकायों
को अपने बजट में जलनिकासी, वर्षाजल
प्रबंधन और आपातकालीन उपकरणों के
रखरखाव को प्राथमिकता देनी चाहिए।
शहरी विकास योजनाओं में प्राकृतिक
जलमार्गों और जलाशयों का संरक्षण
अनिवार्य रूप से शामिल होना चाहिए।
साथ ही, मौसम संबंधी आकड़ों और
स्थानीय अनुभवों के आधार पर भागीदारों
के जोखिमों का आकलन किया जाना
चाहिए। निक्षेपण, बारिश को रोकना नहीं
जा सकता, लेकिन लापरवाही से होना
विलेय नुकसान को काफी हद तक कम
करे जा सकता है। मौसम की चेतावनी
तभी प्रभावी साबित होती है, जब वह
समयबद्ध कार्रवाई, नागरिकों को
जागरूकता और जवाबदेह प्रशासन में
बदलती है। दक्षिण भारत में बारिश का
वह दौर सरकारों और स्थानीय
निकायों के लिए आपदा प्रबंधन का
तैयारियों को परखने का अवसर है।
आवश्यकता केवल तत्काल राहत देने
की नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था बनाने
की है, जिसमें हर नागरिक सुरक्षित रहे।
किसानों की आजीविका संरक्षित हो और
शहरों की बुनियादी सेवाएँ कठिन मौसम
में भी काम करती रहें। यही दूरदर्शी प्रशासन
और जनरल हित आधारित विकास का
वास्तविक पहचान होगी।

क्षमा से महान बनता है व्यक्ति, जैन समाज की एकता
समय की जरूरतः आचार्य नित्यानंदसूरीश्वरजी



भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

बंगलूर, 19 अक्टूबर 2026। बंगलूर के पैलेस ग्राउंड स्थित प्रिंसेस गौलफ सभागार में शनिवार को गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री निलानंदसूरिस्वरजी की निश्रामें राष्ट्र स्तरीय क्षमापना सङ्क्रांति समारोह श्रद्धा, आध्यात्मिकता और समाजिक एकता के संदेश के साथ आयोजित किया गया। समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से आए जैन समाज के प्रभुनिधियों, संतों और श्रद्धालुओं ने भाग लेकर क्षमाभावना को आत्मसात करने तथा भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में पन्थाश्री धर्मशीलविजयजी, मुनिश्री मोक्षानंद विजयजी, धरपेंद्रविजयजी, ज्ञानानंद विजयजी, परमानंदविजयजी, साध्वी सिद्धप्रज्ञाश्रीजी एवं रश्मिप्रज्ञाश्रीजी सहित की विशेष उपस्थिति ने समारोह को व्यापक धार्मिक समन्वय का स्वरूप प्रदान किया। हृदय की सच्ची संवेदना से जुड़ी हो क्षमा समारोह को संबोधित करते हुए गच्छाधिपति आचार्य श्री निलानंदसूरिस्वरजी ने कहा कि क्षमा केवल औपचारिकता या दिखावे का विषय नहीं, बल्कि हृदय की सच्ची संवेदना से जुड़ा भाव होना चाहिए। जैन धर्म की आत्मा अहिंसा और क्षमा में निहित है। जैन सिद्धांतों को जीवन में अपनाकर ही व्यक्ति स्वयं में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है और समाज में सद्भाव स्थापित कर सकता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि जैन समाज को आज एकता की अत्यंत आवश्यकता है। अपने-अपने संप्रदाय, गच्छ और समुदाय की परंपराओं

अनेक साधु-साध्वियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। स्थानवासी परंपरे के मुनिश्री ज्ञानमुनिजी की विशेष उपस्थिति ने समारोह को व्यापक धार्मिक समन्वय का स्वरूप प्रदान किया। हृदय की सच्ची संवेदना से जुड़ी हो क्षमा समारोह को संबोधित करते हुए गच्छधिपति आचार्य श्री नित्यानंदसूर्यशरवजी ने कहा कि क्षमा केवल औपचारिकता या दिखावे का विषय नहीं, बल्कि हृदय की सच्ची संवेदना से जुड़ा भाव होता है। जैन धर्म की आत्मा में अहिंसा और क्षमा में निहित है। इन सिद्धांतों को जीवन में अपनाने की व्यक्ति स्वयं में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है और समाज में सद्भाव स्थापित कर सकता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि जैन समाज को आज एकता की अत्यंत आवश्यकता है। अपने-अपने संप्रदाय, गच्छ और समुदाय की परंपराओं

का पालन करते हुए भी सभी को भगवानाना महावीर के सिद्धांतों के अंतर्गत एकटु होकर धर्म की रक्षा और संघ संगठन को मजबूत करनेके लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने संक्रान्त समाज के लाभार्थी आर्थिक परिवार के सम्पूर्ण धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की अनुमोदनाश्रीजी की तथा साध्वी सुमंगलाश्रीजी का पुण्य स्मरण किया। क्षमा व्यक्ति को महान बनाती है। मुनिश्री ज्ञानमुनिजी स्थानासन परंपरा के महान मुनिश्री ज्ञानमुनिजी ने कहा कि क्षमा व्यक्ति को महान बनाती है और क्षमाभाषाना उसे आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है। उन्होंने आचार्य श्री नित्यानंदसूरीश्वरजी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने समाज को जोड़ने का प्रयास किया है। ऐसे प्रभावशाली संतों का साधनिय प्रपात होना सौभाग्य की बात है। समाज के प्राथम में गुरु कल्याण की प्रतिष्ठा समक्ष दीप प्रज्वलन और मल्लयुग किया

गया। इस अवसर पर गोडवाड़ भवन ट्रस्ट के महासचिव विक्रम करंबावाला, चिकिटोपाध्याय आदिनाथ संघ के अध्यक्ष गौतम सोलंकी, स्थानिकवासी महासंघ के अध्यक्ष भीमचंद स्मरकलेवा, जीतो साय्य चैतुर के चेयरमैन महेंद्र जियानी, बेंगलूरु होलसेल क्लब एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रकाश पिरवाल तथा कार्यक्रम के लाभार्थी उत्तमचंद आच्छ और नरेंद्र आच्छ सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। नरेंद्र आच्छ ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। अखिल भारतीय आत्म वल्लभ जैन महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार ओसवाल, महामंत्री ओसैन जैन तथा पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और सिक्किमराबाद सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए संस्थाओं के पदाधिकारियों ने क्षमामा की और आचार्यरी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। इस दौरान कई जैन संघों ने संतों से अपने-अपने संघ में चातुर्मास करने का निवेदन भी किया। दिल्ली में गुरुकुल की घोषणा, धार्मिक पाठशाला को सम्मान समारोह में धार्मिक एवं संस्कारमूलक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की दिशा में महत्वपूर्ण घोषणा की गई। दिल्ली स्थित विजय वल्लभ स्मारक परिसर में आचार्यरी की प्रेरणा से गुरुकुलम शुरू किया जाएगा, जहां चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और संस्कारों पर आधारित शिक्षा प्रदान की जाएगी। इसका संछालन आत्म वल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा किया जाएगा। इसके साथ ही वल्लभ स्मारक

संस्थान, दिल्ली की ओर से लुधियाना में पिछले 75 वर्षों से बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान कर रही श्री आत्म वल्लभ जैन धार्मिक पाठशाला को विजय वल्लभ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पाठशाला के वर्तमान मुख्य प्रबंधक वीरभूषण जैन को एक लाख रुपये का चेक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। तत्पश्चा, दीक्षा और साहित्य का भी रहा विशेष प्रसंग। समारोह में गुरुदास से आए सुनील बजाज और उनकी पुत्री अश्विनी बजाज ने आचार्यश्री से दीक्षा ग्रहण करने के लिए आशीर्वाद प्राप्त किया। आच्छ परिवार ने दोनों दीक्षास्थलों और अतिथियों का सम्मान किया। इस अवसर पर गुरु आत्म प्रतिमा दर्शन तथा घनश्याम दास की संगीत विरासत पर आधारित पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। पुणे निवासी गीता सोनामलिया, जिन्होंने 150 उपासकों की दीक्षा तत्पश्चा, ने आचार्यश्री के श्रीमुख से पचस्वखाण ग्रहण किए। कार्यक्रम के लाभार्थी आच्छ परिवार को भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मनीष खड़ीवाल ने किया। संक्रांति भजन के बाद मुनिश्री मोक्षानंदविजयजी ने संक्रांति स्तोत्र का श्रवण कराया। संक्रांति में गच्छाधिपति आचार्यश्री ने अंतर्गत स्तोत्र सुनाया और सामूहिक प्रार्थनाएं कराईं। समारोह ने श्रद्धा, अहिंसा, धार्मिक संस्कारों और सामाजिक समरसता के हेतुत्व को रेखांकित करते हुए जैन समाज में आपसी सहयोग और एकजुटता का संदेश दिया। समारोह प्रेषक नारायणलाल सीरवी सेणचा बेंगलूर

भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.co

चेन्नई, 19 अक्टूबर 2026। चेन्नई के साहूकारपेट स्थित श्री श्रृंगेरी मठ, कोडितोप में भारतीय संस्कृति संरक्षण

आए परित्राजक श्री कृष्णाकुमार ने वेदोक्त मंत्रों के साथ महायज्ञ संपन्न कराया। यज्ञ के दौरान श्रद्धालुओं ने विधिपूर्वक आहुतियां अर्पित कीं और मां भगवती के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। मंत्रोच्चार



समिति की ओर से आयोजित महायज्ञ एवं नवदुर्गा पूजन समारोह श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। वैदिक मंत्रोच्चार, यज्ञ में आहुतियों और मां दुर्गा के जयकारों के बीच श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना की। आयोजन में शामिल भक्तों ने परिवार की सुख-समृद्धि, उच्च स्वास्थ्य और विश्व कल्याण की कामना की। समारोह में हरिद्वार स्थित शांतिकुंज से

और धार्मिक अनुष्ठानों से मत परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा। नौ कन्याओं का पूजन कर दिया सम्मान और सेवा का संदेश नवरात्रि महोत्सव के अंतर्गत नौ कन्याओं को मां दुर्गा के नौ स्वरूपों का प्रतीक मानकर उनका पूजन किया गया। श्रद्धालुओं ने कन्याओं के चरण पखारकर आशीर्वाद लिया। इसके बाद दानदाताओं के सहयोग से कन्याओं

को भोजन कराया गया तथा महाप्रसाद और उपहार धर्म कर उनका सम्मान किया गया। भारत परंपरा के अनुसार आयोजित इस कन्या पूजन के माध्यम से श्रद्धा, सेवा और बालिकाओं के सम्मान का संदेश सामने आया। कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं ने इस अनुष्ठान में भाग लेकर मां भगवती के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। आरती और महाप्रसाद में शामिल हुए श्रद्धालु समारोह में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा की विशेष आरती और अर्चना में भाग लिया। भक्तों ने संसार में शांति, प्रत्येक परिवार में सुख-समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना में पूजा की पूर्णाहुति के बाद दानदाताओं के सहयोग से श्रद्धालुओं के लिए सामूहिक महाप्रसाद की व्यवस्था की गई। आयोजन की व्यवस्थाओं में भारतीय संस्कृति संरक्षण समिति, चेन्नई के संयोजक हनुमानराम पटेल की प्रमुख भूमिका रही। उनके साथ जयंतिलाल गोपाल, मोहन, दिनेश, मुकेश और भरत रावल सहित अन्य सेवादारां ने कार्यक्रम के संचालन और व्यवस्थाओं में सहयोग दिया। समिति के मीडिया प्रभारी दिनेश जंकरड ने आयोजन से संबंधित जानकारी साझा की। महायज्ञ एवं नवदुर्गा पूजन समारोह कार्यक्रम आस्था, भारतीय संस्कृतिक परंपराओं और सामूहिक सेवा भावना के साथ संपन्न हुआ।

सुदाम नगरमें भक्ति और उल्लास के साथ मना

नवरात्रि उत्सव, नारी सम्मान का दिया संदेश

भारतार्थ खबर Bhaaraataarth.com
बैंगलूर, 19 अक्टूबर 2026। बैंगलूर के सुदाम नगर में सर्वजन एकता मंच की ओर से नवरात्रि उत्सव भक्तिभाव, श्रद्धा और हार्मोनेलास के साथ मनाया गया। धार्मिक आवाजों में श्रद्धालुओं ने उत्सवाहूयक भाग लिया और मां दुर्गा की आराधना कर सुख-समृद्धि की कामना की। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश से आए भजन कलाकारों ने भक्तिमय प्रस्तुतियां देकर वातावरण को आध्यात्मिक रंग में रंग दिया। मनमोहक भजनों की धुन पर श्रद्धालु



झूम उठे और भक्ति संगीत का आनंद लिया। पूरे आयोजन में धार्मिक उत्साह और उल्लास का माहौल देखने को मिला। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां को चुनरी अर्पित कर पूजा-अर्चना की। अपने संबोधन में उन्होंने नारी समाज के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि जहां नारी का सम्मान होता है, वहां सुख, सम्पन्न, आनंद, खुशियां और प्रेम का वास होता है। उन्होंने अपने संदेश के माध्यम से समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान, सकारात्मक सोच और सद्भाव की भावना को मजबूत करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में नारी के सम्मान को परिवार और समाज की खुशहाली से जोड़ते हुए सामाजिक मूल्यों की महत्ता पर बल दिया गया। सर्वजन एकता मंच के अध्यक्ष राकेश शुक्ला ने मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत का स्वागत किया। नवरात्रि के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम ने धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकता और आपसी सद्भाव का संदेश भी दिया। समाचार प्रेषक उपेन्द्र कुमार बेंगलुरु।

बेंगलुरु में महाअष्टमी पर उमड़े श्रद्धालु, दुर्गा पूजा के साथ निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर



भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 19 अक्टूबर 2026। बेंगलुरु में श्री वैशाली जनकल्याण दुर्गा पूजा समिति की ओर से शारदीय नवरात्र महोत्सव के अंतर्गत रविवार को महाअष्टमी पूजा श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ संपन्न हुई। पूजा पंडाल में मां दुर्गा के दर्शन

के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। वैदिक मंत्रोच्चार, आरती, पुष्पांजलि और भजन-कीर्तन से वातावरण भक्तिमय बना रहा। श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा की आराधना कर परिवार की सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और कल्याण की कामना की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बीटीएम लेआउटएंडके विधायक और कर्नाटक सरकार के वन



एवं पर्यावरण मंत्री रामलिंगा रेड्डी उपस्थित रहे। उनकी मौजूदगी आयोजन का प्रमुख आकर्षण रही। पूजा की व्यवस्थाओं में समिति के पूजा अध्यक्ष पंकज कुमार, ट्रस्ट अध्यक्ष राज कुमार शर्मा, सचिव मुकेश सिंह, धीरेन्द्र सिंह, प्रवीण पांडेय और एके. गुप्ता सहित पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने सहयोग दिया। चंदन, सुरेश

विश्वकर्मा, प्रमोद, चंदन और निर्मल राठौर सहित अन्य सदस्यों ने भी आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया। श्रद्धालुओं के लिए भंडारे की व्यवस्था की गई, जिसमें लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। धार्मिक आयोजन के साथ जनसेवा की पहल दुर्गा पूजा के साथ सामाजिक सरोकारों को जोड़ते हुए समिति ने सेवा

ब्रिगेड फाउंडेशन के सहयोग से साकारा अस्पताल द्वारा आयोजित निःशुल्क प्राथमिक स्वास्थ्य जांच शिविर को भी प्रमुखता दी है। यह शिविर 17 से 20 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। सेवा ब्रिगेड फाउंडेशन के संस्थापक प्रवीण पांडेय के अनुसार, शिविर के पहले दिन लगभग 100 लोगों ने स्वास्थ्य जांच का

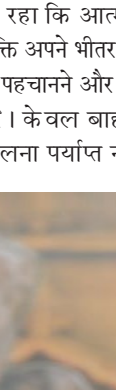
पूजा ठाढ़ा। शिविर में रक्तचाप, ब्लड शुगर, बाँड़ी मास इंडेक्स (बीएमआई) रक्त में ऑक्सीजन का स्तर (एसपीओ2) और पसल रक्त की जांच की जा रही है। इस पहल का उद्देश्य धार्मिक आयोजन के साथ लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य जांच की सुविधा उपलब्ध कराना है। कुमकुम अभिषेक से विजयादशमी तक हो रहे विविध आयोजन समिति की ओर से जारी कार्यक्रम के अनुसार, 19 अक्टूबर को कुमकुम अभिषेक एवं छप्पन भोग का आयोजन होगा। 20 अक्टूबर को महानवमी पूजा और 21 अक्टूबर को विजयादशमी पूजा संपन्न होगी। इसके बाद 22 अक्टूबर को दोपहर 12:30 बजे भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी, जिसके पश्चात मां दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन किया जाएगा। श्री वैशाली जनकल्याण धार्मिक समिति का महाअष्टमी आयोजन पूर्ण आस्था, सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक सेवा के समन्वय का उदाहरण बनना। पूजा-अर्चना के साथ स्वास्थ्य जांच शिविर जैसी पहल ने उत्सव के जनकल्याण से जोड़ने का प्रयास किया समाचार प्रेषक प्रवीण पांडेय बंगलुरु।

मोह से मुक्ति और सम्यग्दर्शन का मार्ग: मुनि वीरसागर जी ने समझाया धर्म का व्यावहारिक स्वरूप

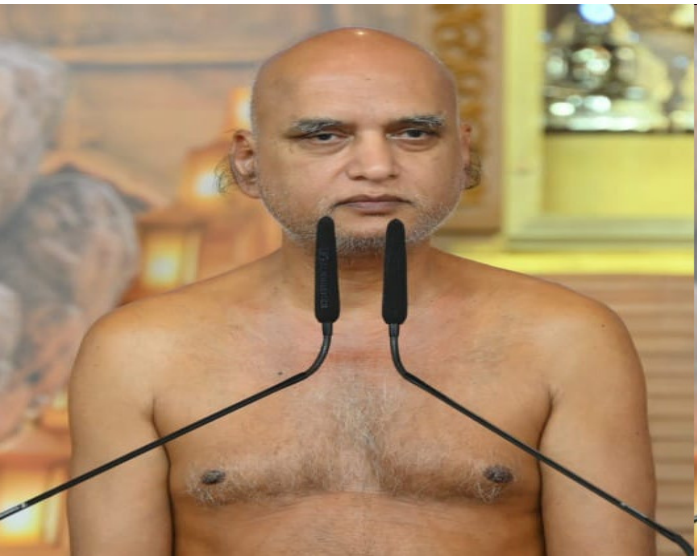
भारतार्थ खबर
Bhaaratarth.com

बंगलुरु, 19 अक्टूबर 2026 | बंगलुरु में न्यायिक श्रमण मुनि श्री 108 वीरशक्ति जी महाराज के सान्निध्य में औपचारिक तीन दिवसीय विशेष प्रतिमाधारी शिविर का रविवार, 18 अक्टूबर को आध्यात्मिक वातावरण में समापन हुआ। शिविर के अन्तिम दिन मुनि श्री ने मोह तोड़ने का उपाय और दर्शन प्रतिमा का व्यावहारिक स्वरूप विषयों पर सधकों को मार्गदर्शन दिया। सत्रों में आत्मचिंतन, वैराग्य, सम्यग्दर्शन और धार्मिक सिद्धांतों को दैनिक जीवन में अपनाने के महत्व पर चर्चा हुई। तीन दिनों तक चले इस शिविर में जैन श्रावक जीवनों, प्रतिमाधारी आचरण, आत्मसंयम, धार्मिक अनुशासन और साधना के व्यावहारिक पक्षों पर विचार-विमर्श किया गया। इसका प्रमुख उद्देश्य सधकों को धार्मिक सिद्धांतों को समझ विकसित करने और उन्हीं अपने आचरण में उतारने के लिए प्रेरित करना रहा। मोह और आसक्ति को पहचानाना आत्मचिंतन की पहली सीढ़ी शिविर के अन्तिम दिन ब्रह्मोह तोड़ने का उपाय ब्रह्म विषय पर मार्गदर्शन देते हुए मुनि श्री ने मोह, आसक्ति और आत्मजागरूकता के महत्व पर प्रकाश डाला। जैन दर्शन में मोह को आत्मकल्याण और आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग में बाधक माना गया है। व्यक्ति जब संबंधों, वस्तुओं, इच्छाओं और अपेक्षाओं के प्रति अत्यधिक आसक्त

हो जाता है, तो उसका विवेक और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इस विषय पर दिए गए मार्गदर्शन का प्रमुख भाव यह रहा कि आत्मचिंतन के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर उत्पन्न होने वाले भावों को पहचानने और उन्हें समझने का प्रयास करे। केवल बाहरी परिस्थितियों को बदलना पर्याप्त नहीं है, बल्कि अपने



विचारों, इच्छाओं और प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण करना भी आवश्यक है। मुनि श्री के मार्गदर्शन में विवेक, वैराग्य और आत्मजागरूकता को आध्यात्मिक जीवन के महत्वपूर्ण आधारों के रूप में समझाया गया। वैराग्य का आशय जीवन् की जिम्मेदारियों से विमुख होना नहीं, बल्कि



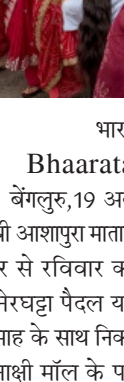
वस्तुओं और परिस्थितियों के प्रति अनावश्यक आसक्ति को कम करते हुए संतुलित दृष्टिकोण विकसित करना है। दर्शन-प्रतिमा में श्रद्धा के साथ आचरण का महत्व शिविर का दूसरा प्रमुख विषय ह्यदर्शन-प्रतिमा का व्यावहारिक स्वरूप रह्य। इस सत्र में जैन श्रावक जीवन में दर्शन-प्रतिमा की भूमिका तथा सम्यग्दर्शन के महत्व पर



मार्गदर्शन दिया गया। जैन परंपरा में श्रावक की प्रतिमाएं आध्यात्मिक अनुशासन और धार्मिक प्रगति के विभिन्न चरणों से संबंधित हैं। दर्शन-प्रतिमा के संदर्भ में सच्चे देव, शास्त्र और गुरु के प्रति सम्यक् श्रद्धा, निष्ठा और बहुमान का विशेष महत्व माना जाता है। मार्गदर्शन का प्रमुख संदेश यह रहा कि

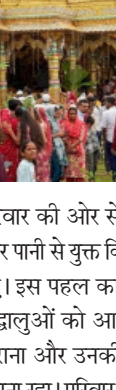
धार्मिक ब्रह्मा केवल पूजा-पाठ और अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और समाजशास्त्री में भी उसकी धार्मिक समझ दिखाई देनी चाहिए। देव, शास्त्र और मनु के प्रति श्रद्धा का वास्तविक महत्व उनके उपदेशों को समझने तथा उनके अनुसरण जीवन को दिशा देने के प्रयास में भी निहित है। धर्म को दैनिक जीवन में उतारने पर जोर प्रतिमाधारी शिव में धार्मिक सिद्धांतों के व्यावहारिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया गया। साधकों को आत्मसंयम, विनय, विवेक और जागरूकता जैसे गुणों को जीवन में स्थान देने के लिए प्रेरित किया गया। धार्मिक अनुशासन का महत्व तथा अधिक सार्थक होता है, जब व्यक्ति उसके उद्देश्य को समझते हुए उसका पालन करे। दैनिक जीवन में लिए जाने वाले निर्णयों, दूसरों के प्रति व्यवहार और विभिन्न परिस्थितियों में अपनी प्रतिक्रियाओं पर ध्यान देना भी आत्मविकास की प्रक्रिया का हिस्सा है। शिव के दौरान सामायिक, आत्मसंयम, पीड़ा के प्रति समताभाव, मोह से मुक्ति और सम्यग्दर्शन जैसे विषयों पर भी विचार करने का अवसर मिला। इन विषयों के माध्यम से साधकों को अपने धार्मिक संकल्पों और आचरण का मूल्यांकन करने की प्रेरणा मिली। शंका-समाधान से साधकों की जिज्ञासाओं का निराकरण शिव में साधकों की जिज्ञासाओं के समाधान के लिए विशेष अवसर भी रखा

गया। श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक जीवन, साधना और धार्मिक सिद्धांतों से जुड़े प्रश्न प्रस्तुत किए। मुनि श्री ने सरल एवं सहज शैली में मार्गदर्शन देकर विषयों को समझने में सहायता की। शंका-समाधान सत्र के माध्यम से साधकों को अपने प्रश्नों पर विचार करने और धार्मिक शिक्षाओं को व्यावहारिक जीवन से जोड़कर समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम में बेंगलुरु-सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए साधक-साधिकाओं ने सहभागिता की। आत्मचिंतन और अनुशासन के संकल्प के साथ समापन तीन दिवसीय विशेष प्रतिमाधारी शिविर का समापन आत्मचिंतन, धार्मिक जागरूकता और आध्यात्मिक अनुशासन के संदेश के साथ हुआ। मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाशय के सान्निध्य में आयोजित इस शिविर में साधकों को जैन धर्म के सिद्धांतों को केवल जानने तक सीमित न रखकर उन्हें समझने और जीवन में अपनाने की प्रेरणा मिली। शिविर का केन्द्रीय संदेश रहा कि आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए व्यक्ति अपने भावों के प्रति जागरूक बने, मोह और आसक्तियों को समझने का प्रयास करे तथा सामयिकदर्शन और आत्मसंयम को अपने जीवन का हिस्सा बनाए। इस प्रकार शिविर ने धार्मिक अध्ययन के साथ व्यक्तिगत आचरण और आध्यात्मिक विकास के महत्व को रेखांकित किया। समाचार प्रेक्षक विमल कुमार जैन बेंगलुरु।



भारतार्थ खबर
Bhaarataraarth.com

बेंगलुरु, 19 अक्टूबर 2026। बेंगलुरु में श्री आशापुरा माताजी भंडारी जैन ट्रस्ट की ओर से रविवार को आशापुरा माताजी बन्नरेघट्टा पैदल यात्रा श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ निकाली गई। सुबह 6 बजे मीनाक्षी मॉल के पास स्थित श्री मीनाक्षी मंदिर से यात्रा स्वाना हुई। आयोजकों के अनुसार, इसमें लगभग 700 से 800 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। माता के जयकारों, ढोल-नगादों और बैड की धुनों के बीच भक्त नाचते-गाते हुए आगे बढ़े। पैदल यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। भक्तों ने सामूहिक रूप से माता के जयकारों लगाते हुए अपनी आस्था व्यक्त की। यात्रा मार्ग में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई। रास्ते में जलपान, मंजिल पर भुक्तिका का उल्लास यात्रा के दौरान बसंतपुरा स्थित शनिदेव मंदिर परिसर में चाय-पानी की व्यवस्था की गई। इसके बाद बन्नरेघट्टा पहुंचने पर श्रद्धालुओं के लिए अल्पाहार की व्यवस्था



परिवार की ओर से पैदल यात्रियों को नारंग और पानी से युक्त किट बैग प्रेमपूर्वक भेंट किए गए। इस पहल का उद्देश्य यात्रा में शामिल श्रद्धालुओं को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना और उनकी यात्रा को सुविधाजनक बनाना रहा। परिवार ने माता के चरणों में पूजा-अर्चना कर सभी यात्रियों की मंगलकामना की। छप्पन भोग और आरती के साथ संपन्न हुआ धार्मिक आयोजन बनेरघट्टा स्थित आशापुरी माताजी मंदिर में श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से पूजा-अर्चना और आरती की। माता के छप्पन भोग अर्पित करने के बाद भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। पूरे आयोजन में धार्मिक आस्था, सामूहिक सहभागिता और सेवा भावना प्रमुख रूप से दिखाई दी। श्री आशापुरी माताजी भंडारी जैतू ट्रस्ट की इस पैदल यात्रा में श्रद्धालुओं को एक साथ धार्मिक यात्रा में शामिल होने और सेवा कार्यों में सहभागिता निभाने का अवसर प्रदान किया। माता के जयकारों के बीच संपन्न हुए इस आयोजन में भक्तों ने परिवार, समाज और सभी के कल्याण की कामना की। समाचार प्रेषक केसाराम प्रजापत बेंगलुरु।



